हिन्दी - विभाग
डा० कविता कुमारी सिंह

B.A. III

विषय — रस निष्पत्ति

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।
'विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्ति।'

विभाव — वे व्यक्ति या पदार्थ जो भावोत्तेजना के मूल कारण है विभाव कहलाते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं — आलम्बन विभाव एवं उद्दीपन —

आलम्बन — विभाव वे हैं जिनका आलम्बन ले रति, हास्य, क्रोध, शोक, भय, जुगुप्सा, उत्साह विस्मय आदि भाव जाग्रत करते हैं।

उद्दीपन — विभाव वे कहलाते हैं, जिन वस्तुओं को देखकर रति या स्थायी भाव तीव्र या उद्दीप्त हो जाते हैं। जैसे — चन्द्रोदय, कोकिल गुंजन, एका[illegible]

अनुभाव — स्थायी भावों के उदय होने के पश्चात जो शारीरिक विकार दिखायी देते हैं

को अनुभाव कहलाते हैं। अनुभाव चार प्रकार
होते हैं — कायिक, मानसिक, आहार्य और सा
(3) व्यभिचारी भाव — व्यभिचारी भाव स्थायी
के विपरीत क्षणिक होते हैं। स्थायी भाव के
के रूप में वर्तमान रहते हैं। अनेक रसों मे
~~व्यभिचा~~ व्यभिचरण के कारण संचारी भा
व्यभिचारी भाव कहा जाता है।

<u>साधारणीकरण</u> — काव्य पढ़ते या नाटक देखते
पाठक इतने तन्मय हो जाते हैं कि स्व-त
भावना से ऊपर उठकर वर्णनों या दृश्यों
रोते और प्रसन्न होते हैं — यद्यपि रोना
दशा में आनन्दप्रद लगता है, तो यही
साधारणीकरण है। रंगमंच पर अभिनीत हो
में रतिभाव सामाजिक के नहीं होते और श
नहीं होते, मित्र के भी नहीं होते, तटस्थ
होते हैं, किन्तु भावानुभूति अवश्य होती
नैयक्ति भी नहीं कहा जा सकता है, रस
भी नहीं की जा सकती। इसी रस

प्राचीन आचार्यों भट्टनायक और अभिनव
ने साधारणीकरण नामक व्यापार का निर्देश कि
है। डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद ने अपनी पुस्तक
'साहित्य का विश्लेषण' में लिखा है — "काव्य जी
और जगत से संबंधित कवि के हृदय की भा
वृत्तियों की अभिव्यक्ति है। कवि के सत्य और
की जो झलक प्राप्त होती है उसे वह अविलम्ब
में बाँट देने के लिए आकुल - व्याकुल होने
है। उसकी अनुभूतियाँ, उसकी कामनाएँ और अ
इतनी प्यारी होती है कि उन्हें छिपाकर रखने में
हो जाता है। अतः वह अपनी व्यक्तिगत सीमा
अतिक्रमण कर अपनी अनुभूतियों और प्रतीतियो
लोकमान्यता प्राप्त करना चाहता है। वह व्य
बन जाता है। कवि हृदय की उस मंगल -
काव्य - शास्त्र में साधारणीकरण कहते हैं।" सि
अवधारणा बड़ी ही स्थूल है। साधारणीकरण के
आधुनिक विद्वानों में आचार्य शुक्ल, डॉ० श्य
डॉ० नगेन्द्र, आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ० राकेश

नन्द दुलारे वाजपेयी, डॉ० गुलाबराय आदि प्रमुख विद्वानों ने विस्तार से विचार किया है।

वस्तुतः साधारणीकरण शब्द का संबंध भारतीय रस सिद्धान्त से चला आ रहा है। इस सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य भट्टनायक ने रसनिष्पत्ति संबंधी भरत सूत्र — 'विभानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्ति' की व्याख्या के अन्तर्गत किया गया। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों की व्याख्या के को दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया है। अनुसार 'आरोपवाद' या अनुमितिवाद की स्थापना जो त्रुटियां और आत्मदोष आ जाते हैं उनके के लिए साधारणीकरण की स्वीकृति आवश्यक है। अपने मत की प्रतिपादन के प्रसंग में काव्यगत शक्ति 'भावकत्व' की इस प्रकार व्याख्या की है द्वारा काव्य के शब्दार्थ (भाव) के ग्रहण होने द्वारा इस अर्थ की भावना होता है, अर्थात वैयक्तिकता विनिष्ट हो जाती है। भाव विशि रहकर निर्विशेष साधारणीकरण रह जाता है भावना की प्रतिक्रिया साधारणीकरण है।